

जातकरीक Title -

Accession No - Title

Accession No

22/ Folio No/ Pages

Lines-

Size

Substance Paper

-देवनागरी Script Devanagari

र्म्यून Language

Period

भी अभित्रमय नमः Beginning -

शस्त्राज्या Tolor End

Colophon-

Illustrations

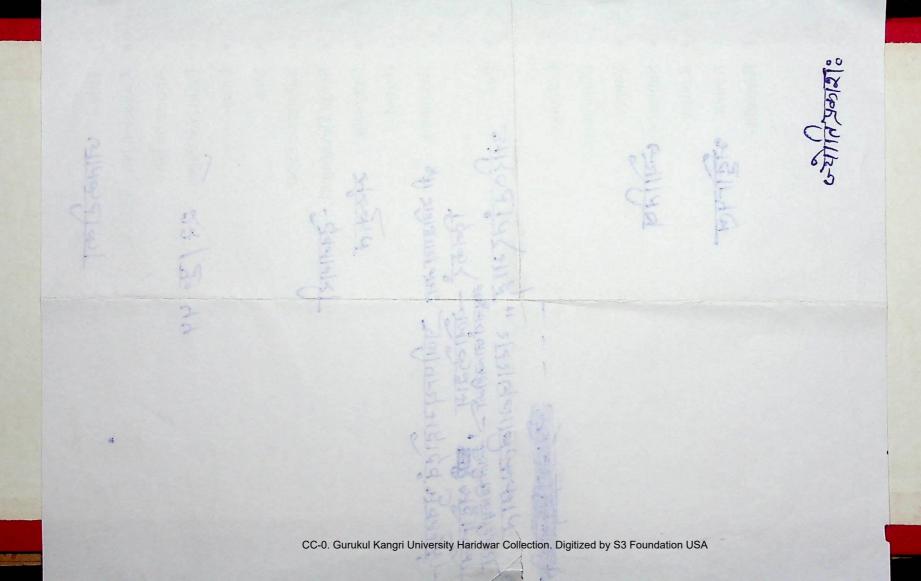
Source CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by \$3 Foundation USA

विमामिन Subject -

Revisor -

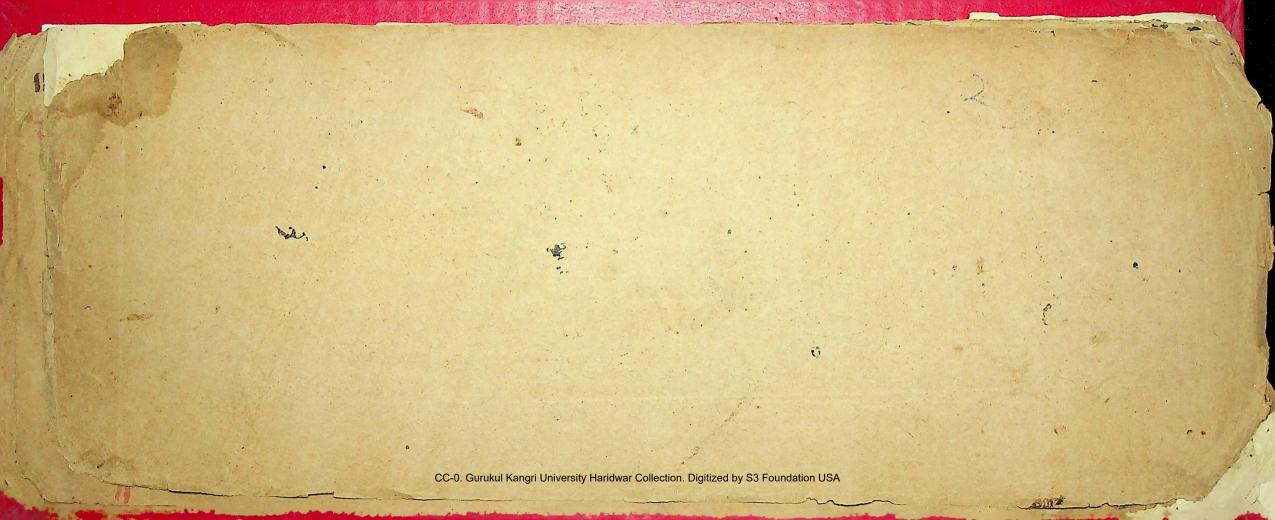
Author -

Remarks-



1211

वेवव्राप्त्रत्मक्षेत्रादि तो व्यक्तियको द्यात्ता मान्येस समुक्ति घष्ट्र । एकप्रलेशिक्त मंजितिने वास्ता मिलान के निधाः स्वांशिय में निधा मिला के निधाः स्वांशिय में निधाः स्वांशिय के निधाः में जिला ने विश्वान के निधाः में निधाः ने जिला ने विश्वान के निधाः स्वांशिय के निधाः स्वांश



प्राथा ॥ ॥ महमिन्न मन्यानिक्तामक्षेत्र मेण्डामी विषया मितास्य में न तसिय द वारितीय द व वार्याय म मिलप्रकरी में रेतिएक किएक स्थान सामान सामान करिया विवास करिया के मानी कर्या करिया के स्थान करिया या है। तेमित इकारि। दी पहें वा एका तमको इकारि। घट परिनित् खका दामे माद्याराशयःकाल स्पामानि। स नकालगरहण नाति तत्के ते नुमीयते। उन्नेतामनेने के के का लाइनि वरागमा नन मुरइति ते जेका लाख्य । रे प्रयामे प्रिर्विक के मर्गा मिएनवा हु। के केट कर्या। सिर्वेटर्गा केना । रामा किटिन तो निमाने । रामा किटिन तो निमाने । रिमाने कि केट कर्या। सिर्वेटर्गा केना । रामा किटिन तो भारति के एक समले । रिमाने । र माताह। अस्य विजनमहा। यदन तिमन जनमिन असिम मुम् जनकर्मा क्रितंसित तस प्राप्ति मेति। मयानिवद्वितीत्वशास्त्राणि। य त्रस्माच्या यीधिः सार्महंसंप्रवद्या

लियारिक स्थापिक स्थापि यित्र संस्था पंचमनवमामानह पश्चिमाद कार्कलीरः कर्तरः तस्वपार चमनदमामा सहैउ नराद का प्रथाननं ची राद्यायमानि सामा

जाने या लंग कर ।। जंदों के में ।। वर ले पार्त मिनः।।।। श्री प्रस्व वां दु देर था। दर ले कर विकास वां प्रस्ति कर स्वां प्रस्ति विकास वां प्रस्ति वां प् स्मावयवा जिल्लाचित्रयेत्वसवकाते। सदर्हितं के गा तु ए। की पद्रवं स्नाति। 14॥ नरहति प्रकाननं की कीट्र राषि कुक्त महा को ते हु की कीटी नाम रोकी ताल पाकाते कुरोकी नाम के कीट्र राषि कुक्त महा को ते हु की कीट्र नाम की नाम के जाति प्रवास के काल की नाम की तिनाते जाद के राष्ट्रिय प्रस्क्रम्स णवर्णाः ।त वर्षे के रू ए दे हुउ कः ।विषक्रितः। मिष्ठ ने दिर ताक के ए पार ले के स्माता मा । सिंह हु पाउ विश्वास विविवः। ।ता विविवः। ।ता वर्णा तलः सिते तर के साथि प्रकः रिशं मा सिर्ण वर्षः।।धन्ति प्राले। । मक ार्णाम माः मित्र प्रतिष्ठाः जिस्साः जिस्सा जिस्साः जिस्सा जिस्सा

शदेक्षाएहेराध्यात ज्ञानार्वमहाद्वाद्वासमासारतात्। हाद्वामामा वसर्ववतादण्या नाराय्याचित्रमहित्यत्वः देखाणः प्रयम् प्रवम्भवम् नं र्तिदेकालियिमाः तेवानयकान्य प्रयम्बनवम् नं नसंबंधिने मामाः देशाताः प्रवासवन्तवण नंग है। राविष्य मेर्के हे सम्प्राणी वह तीहणांश्रीः है तियो ने साम जीव हमाने वह तीहणांश्रीः है तियो हो तीहणांश्रीः है तियो हो तीहणांश्रीः है तीहणांश्रीः है तीहणांश्रीः हो तथ्ये इंतित्रविष्ठमग्रातिनं प्रेषिण्निहिं। ने प्रमाहितिया विष्ठा निय वेद्रममा। समग्रीकं र वकर्ठ कंनादी ना प्रयमं वं द्रम्सः दितीयार्क माणा ॥ । विशापम महातत्रादी वे कार्य मं वं दे मसः दितीयार्क माणा ॥ । विशापम महातत्रादी वे कार्य मण्डा ना ततः परंश ने प्रारं मण्डा ना ततः परंश ना ततः परंश ने परंश ने परंश ना ततः परं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राशंक का हि प्रमहा के जाद के ने बादी ना मिया जा साम में माधा प्रमें ति:।। र वस्म म् नः।। तिया न स्व उधाः। किर्का स्व स्व स्व स्व सामानित्सा ।। किन् नेक्रराक्तिमसमन के नेक्षित्र ए वार्या वस्ता वह स्वति। व वार्या का नाम जमकर है है ठेला के लीश दा हो भाव ये में वस्त्र में वा वारा के वार्या के ना ता "व्यस्मकराद्याः कं नां ता ।। भिद्यनस्य ठलावाः॥ भिद्यना ताः॥ ।। भुज्यम शेद्दर श्रम् क कुल मी वसे शियम एक वा भाग वाण का नाम जमकर रं ठला कुली राद्याः॥ = ॥ कर्क स्वक्र दा याः मीला ताः॥ मे सबित्रधनु र्धरके । इस वता नाम कर के । । । । । । । कि हिला के माने के हिला के माने के ने के ।। व के हिला के माने के ने के ने के ।। व के हिला के माने के ने क्तिरीं ।। मध्य का लेलिला । जा का के दिना विलन ।। जा बार में विलन ।। विशेष माहा अधि पर ते ।। विले के व अधि पयुत्ते द के वा चु हा जी विन सित्ते मु के विकास ।। सम वित वल वा न्यदा नर् शेषुक्ते विवाश वेः॥११॥तन धन महत्र सह ति विवास मान मुध्य मित म्ह्रीय यथा ३० ता मान का का का का का का का विवास मान को ॥१३॥ पंचार के का बखा रिष्ण ॥ उ। साम मन या भानी॥ श्राप्त के ॥ तव मंद्रा की। द्राप्त के की। एका द्राप्त मान या का द्रां वा यो। ति । वा वा का माना वा वा का पात हमें यो गा तो प्रतिवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्पाराष्ट्री नंदी काल वला वला है। वे ने केल पुन केला है लेक भा धन दे की सिए हे हिंदी हैं के हिंदी हैं कि है कि हैं कि है कि हैं माईमका एक ईए ते दक्षिण लगा कुन विश्वा में विश्वा में विश्वा में विश्व में विश्व में विश्व में विश्व में विश्व में च उषादा भे वं। ११ भवित नः दश हस्या ग तार्म प्रशाद मिक कीर पश्चिमस्या विलिनः। सम्मानमाः है सर्वः। माणाः कर्नमानमकरा एते उत्तर स्कावलिन: व तु र्षस्मान गता इत र्षः।। संचा ह्या ति व लिन: इति एवं स्वर्षधन कि हा य ते बदा प्रकार के भागका की र के के र गिर्म के विष्क कि से प्रकार के साथ के से प्रकार के से प्रकार के साथ के से प्रकार के से प्रकार के साथ के से प्रकार के से प्रकार के साथ के से प्रकार के साथ के से प्रकार के साथ के से प्रकार के से प्रकार के साथ के से प्रकार के साथ के साथ के से प्रकार के से प्रकार के साथ के साथ के साथ के साथ के साथ के से प्रकार के साथ क ॥इ॥

वियहेकारवारवामस्याना नाम्य व वे याया। यात्रा यात्रा वियहेकारवामाना व यात्रा वियहेकारवामाना व यात्रा वियह व यात्रा यात् नवप्रस्थातिक क्षांतिक क्षांति क्षांति क्षांतिक क्षांतिक क्षांतिक क्षांतिक क्षांतिक क्षांतिक क मेष्ट् प्रियुन कर्ति देशा सहस्था स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य नवंश्वात्रमहोताः ताः।।१५॥के वादाः सामान्याः ताराः सामान्याः ताराः सामान्याः ताराः सामान्याः ताराः सामान्याः तारा या। एकार याविति युनारिमाने हा भरोगमी नः॥ १ हा अवय द्या विवल महिला ने वा विसं ता माने वेदि त्या । ये या या समिता है ता है ता है ता ये साथ या समिता है ता ये ता ता वेता है ता सम्मान के ता है ता ह ध्यायुरिवतिन इति। तथायराशायाः।। इत्या वला तीविष्णुनाप्रिणु न वर्द्धताए । श्रेष्ट्र या।। १ के दये व्याः। श्रेष्ट्र या।। १ के दये व्याः। श्रेष्ट्र या।। १ के दयः। १ के

निनित्नी केति।। व उद्या के इस्ता व के के कि ता व कि ता कि के एकि हमिन हम कि कि कि मिन कि मित्रम्तारु नयु ने बतरत ने नयका रेगा कि इमक्ष माना सत्ता हार वे दिया है ते नम ज्ञातरम्ह। केंद्रचतुष्यकंटकितियमेकं संज्ञा व यं।। हत्तिहि सहस्ता कि हिन्न मान हर्षे हिन्द से प्रविद्यान न विविद्यान है व के द्वातर साम का का का सिंह कि विस्ता ती कि प्रमान के का का माना के कि प्रमान कि प्रमा

11611

मारिस्मित्र ॥विकारमः॥वहस्य वशामी प्रस्मेषः॥वधस्य स्वतं न्या जी वस्यविश्व ।। श्वामी स्मित्र स्

वरम्मस्म वातादि बुरियतेच रित्यः॥प्राचर्गस्यकायेवमेवेति॥३तिसीभरे यलवरं वितायास्त्रम् तक्ते तेति। वितायास्त्रम् तकते तेति। वितायास्त्रम् तकते तेति। वितायास्त्रम् तकते तेति। वितायास्त्रम् द्वात्रायः प्रयायः॥ १॥ ॥ ॥ अथा त्रायास्त्रम् यो त्रात्रायः प्रयाप्तः । तत्र यः॥तत्र विसादि

दयम्भितारणाञ्चादयङ्नारीका यहिं सार्वाया चात्र स्वाता त्यमादि सम्मिता उत्तरावंडस्पर्वाति मुख्यस्य मत्रात्व स्वाता का मार्गिहस्वता कर्ति दा स्वातं करमाने ।। श्रीने प्रस्काति सार्वाया स्वाता एवस्य संज्ञाद्वादि बुमारे बु ॥२०॥उद्यानी देश प्रमान की दी निर्म के ला सं ज्ञानि॥ सिंह व्यान प्रमदाका में कर ती लिंक मध्याः॥२९॥ ॥उद्यास्मा दाके यः समा संज्ञाः॥ तत्र द शादि युमारे युपरम नि वतं रेपाएवंविधाः सद्यः परमतीच एका भवति। स्रकी दीनाविके एवं राजीता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रह बर्राणि पति माहा ली व पती वहा से री वहास तो यो किता वर्णि शाः । रगण वसार मयन बामिय पाग्रस्मी मामिताः र जी विस् तो विपाण हे वस्मारी ए ग्रहा विशे चहुः प्रदाधियः ए एए स्तारा तेश्वरसं कर भवा ना विष्य के बाह्य ए कि प्रति । व ग्रह्म के स्वास्त्र प्रवास विशेष के स्वास प्रति । वहा स् री अवसा शिका शिक्ष में शिक्ष में मिल्ला हिंद कि मिलिला है हिंद की जीत वुद्धी विभेभवतः।।त्रमातवित्रवीः।। सादितागरकीद्विएदिक्रिकेदशम्मावित्रवीः।।शनेर श्ररः पश्चिमिटक् स्मः।।ससमक्रिमकः।। वंद्रश्च का वृत्रादिक् स्के बतुर्वाके वैत्तिवित्त कः।। एनिद्रावलाञ्चले हावलंदरायने सादि॥यक गदि बद्रराशि मुव त्रयाने ग्रहंपरगावि॥शाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शकिष्वतः।।लक्रेयंप्रकः।।दिशिष्माभी मः।। ने स्वाराद्वा मित्रम्यां सी शावा व के दें।।। या व के दें।। य ।। प्राह्मा रिकार किरा ने के लगुरुष में दुले मा बास्त तमा सी ते व मारा पापा से संग्रहा पंचमीयवात्।।तावतसीएवंद्रीभितावत्वद्यादियात्रात्रीष्ठत्यात्वाः।। तेमं यतः भेषाः । तेषाणा प्रमानक्षेत्र युक्ता व्यः पापत् । अर्षा देवसीए चेदः व्यः पापः । रहितः। दहस्यति प्रकाश्चिमा हो या इति। । महाणसी प्रसांशकारिय मंची है। वृद्ध दाने मरी न प्रमिष प्रति । व द्रम् क्री स्वा धि पतिः।शिषा आदि संगारक दहस्यति मसेल एम धि पत्यः। विकान लेकिन तानादिस्म व्यक्तमादि।। स्रोत्र रादि पति भी वः।। अव व वे दाधि पति वृधः।। सामवेदाधि पति भी मः।। यनु वे दाधि पति वृधः।। सामवेदाधि पति भी मः।। यनु वे दाधि पति वृधः।। सामवेदाधि पति भी ने तनु ले जात्त सिंद राष्ट्री के के क्र सिंद राष्ट्री के क्र सिंद राष्ट

वितायव के किता। यह निश्चिता किसरे या युनिश तो न कि है कु जिसे रा भारिनादि कि अ नेमिरिक बलमेतिहल सामेसाइ रिक्तिता श्री न ने ने में जिस हो रायास मानो विके ने स का ऐसा श्री सिने विता सर्वे न यन हुने ने ने लागह यो स्कल्प स्वति त त्रमेमिकेनवलेनकेष्यक्षात्रकेन्यल्यान्द्रियाच्यात्रवलकानमाहा वित्रदेवे वित्रहरके। क्षेत्रेम की विद्याणिक सहोतेसकी यहारके। सम्बनेसा हरके। स्वर निकाण राष्ट्रा से इक्षणामा सांवासे सिन के लिए ते बुखा ने बुखा ने बुखा ने बुखा ते बुखा ने बुखा ते हैं। से विग्रहाः वलावि ता वाल गुका भ विता है। हिए ज्ञान माहे यो मिन स्था ने ग्रहः कि तक्षामा देश हैं प्रमान ने विश्व के व अर्थादेवान्यस्या नानिन पर्वति। य जपाद हृष्ट्वा पर्वति। त जपादर ए फलंष्यंष्ठ

केमिरिमीदेग्छित पुलाक्षाणा वन्या मं निता कर्व विद्या द सिए। यनस्या त निता विकास द सिए। यनस्या त निता विकास कर्या विकास विता विकास वि का लवल माहम स्निद्दे व ते प्रकादित जी वावलिन ।। ग्रिश ती व हो दे बारा त्री वली वा न का रात्री व द्रा गर क श ने प्रता विलनः।। ना ति ता है ये में में में हा विलनः।। सादि ता दि ग्रहात्वमारेसव वेसका लेहीगयाच॥ अग्रजग्रहा॥ तेवहलेक शपदेवलिना मुभाः भेमातेशक्तपदेवलिनः। नैसर्भकलमासामर्वग्रहेनाः।।हीनवेलेषदःश्नेश्वरः।। शने अगरंगा की वली। शंगारका दुध्ः। दुधा त्जी वाण का भिका अदः। व द्वारिता वलवा वा एत द्वा सामिस भिक्षा वक्ष वला। लसा मामा द्वेत। अधिवलं

मदिति ते के निम्न के श्री है से कि निम्न के श्री के हैं से कि निम्न के श्री के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के से कि निम्न के से कि निम् रिमतेष्मप्रमण्डे महिन्द्र महिन्द्र महिन्द्र के स्वार्थ है । ती स्वार्थ है महिन्द्र म श्राम्यान्य विशासिक्षेत्र विष्या स्वाप्य स्वाप्य क्ष्या अवव्य स्वाप्य 

20

ति। यत्रसम्म हृश्वात्रसम्म मिति। श्री प्रविशे समाहं। ए ए मितिस में। अषि त्राप्ति विध्याहा अर्थ सम्मित्र त्राणा त नादि त्यम ने कि स्वा सामित्र सा। सम्मित्र विध्याहा अर्थ सम्मित्र विध्याहा अर्थ सम्मित्र विध्या समित्र विध्य समित्र विध्या समित्र विध्या समित्र विध्य समित्र समित

वित अर्धरमेणित्र ह्यानानुकानिष्यानानि ताले व पंत्र ए समा मा ए मानि तेष ह्या ने मुने मिति कर्ण अस्मिति हा का असे निर्धाय हो है के प्राप्त हैं कि प्राप्त हैं त्रावेन तिधितुद्रिकात्रमासा का किस परिण ता ति लागाई। व तरको ना तु बक नुकेशः मित्रकेशिक्सास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्राम् । १०। तास्त्रः सरामग्रमियामधीषेगातः। देवाना वरके वनः। र कृषणानः ए जुविसीर्गार ११ वर्षाना प्रतिकाचा । येव स्थान् स्थाना वर्षाना प्रतिकाचा । येव स्थान् स्थाना वर्षाना प्रतिकाचा । येव स्थान् स्थाना । येव स्थाना । य तत्रयः। चयतः चयतः क फवाति कैमैते च क प्रहतिः। कियरमारे किथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ि तर्षा । ए वंती व स्था अध्यक्त का स्था मा की ति । यह से स्था स्था की व स्था से री मुहर रीम बे। समी मध्य स्थो कुल फर्ट मी मजी वे। ए यह व कि में माः ए न व। ए वंस क्या मारा अध्यक्ष । १४। अध्य में स्था कुल ने स्था कि का मिन मुक्तालिमा अमे की मंग व दा । ए व की र स्था त का ल ने स्था कि की जा मिन मुक्तालिमा हात त्काले ति। द ए का ने यिमना। में से मी मिन व री र विस् ते। मस्यो परे बत्य पा की मा की सह री समी कुल फर्ट मुक्त स्थे बावरी। १४। मुक्त तो सह दो समः स्त यहः भीरम ना नेर मः॥त काले बद्धा यवं यु सहल का ने षु मिने धिताः॥१५॥ स्मानेग्रहःस्मितः॥तस्माह्कमनस्माने॥एकाद्रक्षस्मानेच तुर्वस्माने ततीय दिती ये ते दार प्रे यो ग्रहः स्थितः॥ क्षत्र स्था ते क्षित्रं भवति॥ नता चार्य प्राप्त याभिः । सार नाहंसं प्रवस्य मीति॥१ ५॥ दिशित हमित्रस्था नेषुद्रणदिषु प्रित्रविष्य तमित्र भित्र मित्र भित्र भित

जीवस्माह मगुनमनयन ईष लाचराचः मणिनान दुदि मानाउपवित मामः। स्पर्दे हः का त्मकः प्रेच पान वित्र माना स्पर्दे हे ति पान के शा कि लिए म के शा में हिल ति माने शा में हे रामा राम है जिस के शा में है एवं कि कि स्वार में स्व मबुनिमनप्रने मिन्यान पनि तमानः क पालको ने रा ई विवालके को प्रसारं के पालको ने रा है विवालके को प्रसारं के पालको के स्वालको के प्रसारं के पालको के प्रसारं के प्रसारं के स्वालको के प्रसारं वात्। का तो देश नीयः क्षेत्रस्य स्टाहर्य स्टाहर्य स्टाहर्य स्टाहर्य क म वारिकः।।वारिक्रे पा प्रकृति।।प्रधुरवाक्। श्रेत्राभकी मुक्तिगरः। भुक्ताधिकः॥ एवंविको भग गुत्रः मुकः। २१

विकः।। सद्वाक्त्रसम्भविषा चार्याः वार्वाचा विवस्तातिक वात्तन्द्रसः। विक्रिंगः। स्वाम्याः। स्वाम्यः। स्वाम्याः। स्वाम्यः। स्वामः। यः।तरणः मदेवतरणकारः।विण सः का वर वयवः।विति कः विति प्रस्तिः।इतर य र्षः अरि स्तः। च पतः नेमितः सर्ते गोरः ॥ पदा च ना गरिं।। मलासारः। मली। धि कः॥ एवं विधिमा हे यो गारकः॥ १००॥ वृद्धानाह॥ महामहा। महामहा। महामहा। स्वी। स्व द्वाः पा नामे रस्रवलः कम नाति के किथि रसार ।। सद्वा ग्रामिष पस्ता तन् व ते संदमा प्राप्तः १९८०मि से इस्वस्तरणः विणतः चेत्रिकें दुराधा शं ।। च प्लः भर संभेरे मजामार प्र मार्थेहेगः।। १९०१ मद्यामरू पः विषवा गृ वी श्वामः शिरा तती ने च ला।। त क्या र तिस्थि लमत तर्ष चंद्र सतः।। २०॥ के ना वाद शं नी मः विषवा गिर्मिमते व क्या।। द वी श्वार मारद्वलंबलवर्णाक्षिरातता।द्वप्रामायाः निष्णाः। न

व्हांता स्माता त्रमणा ने पाणा महण ते हुए तात मे शुनमा सीता तिमने वत प्रमणा ने अप ते हुए वादि होसी का राहिवह लात के शुनमा सीता। आहा ने साम है ये बते ही की में यूने प्रमान स्वति। सामा सम्बात सुन बी हिने विद्रां हो मुं में रक्षे। शा मणी ने के निव ति मुनह ए नसा या सना विद्रां हो में में मुंत्ह ए साया। मंबर गंदो व १ जा शानकाले जन्म काले वा दी प्रमाना वा मां व माहें मी गार्थ यव 

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैवारोभ वितार

भैरम्णहारुश्रधिः दुर्वलोन्ततः। पिणानः। का नरनयनः। कुष्टः प्रसिद्धः। पिष्रानपर रसस्चकः। श्रलसः। कियास्य प्रशासनित प्रकृतिः नात्रा। स्प्रतानयं दत्रोगाः॥प्रसि दः। एवंविधिशनेश्वरः। रशः।

कुश दी र्घः भंगातः रु ष्टः भिणिने ५ क्लिने ह निल प्र कि भारत् न न न दे तरे माः सर्थ सतस्त्रा यसार आरशाइतिल धु जा त के यत् योति भी याच्या योदि ती यः ॥२॥॥॥ ॥३तिष्त्री म रे त्यलिशिकि का ग्रास्ट्र मा जा तकि ने तिषादि प्रिया ना यो ग्रह योति में रा स्मायो दि ती यः ॥२॥॥॥ ॥ अब आ स्था मा स्था स्था मा स्था त जा दे भे खुन प्र कार ज्ञान मा हा आ सा नी भी बी ज प्र हो का ले॥ त जा जो ने प्र का ते ना यो ला ग्रास स्माराशिशास्त्र य द्वां ने ना शंत प्र येन प्रका रे ए भे खुने करोति ॥ ते न प्रका रे ए भे खुने श्राचानमारार समामसमाधि पतीन ग्राह्म ना र्स्या च्याममासिकतः लस्पा भवति। सुक स्रोणि तेर स्व ने सिमासि में ते ने ने मासिस के पि पतिः। द ती येमासि में में हस्तार दितीये मासि मर्स स्व ने ता भवति तस्म के नीधि पतिः। द ती येमासि में में हस्तार यवय वजना त् तास्म जीवाधि पतिः। च ते धेमा सिमार्भ स्पास्थिभ व ति। ते तास्मा कें िपतिः पंचमेमासितक वर्षमधानित ने जास्माधा पति श्रेष । कललघनावयः न्सिनोगेनस्मित्रमुद्भवाः।कप्रशःमिष्ठपुक्रक्राजीवसर्यचेद्राविसीमाना ४ षरेलेग्रजनातनास्मश्निरधापतिः। ससमेस्यतिसमुद्रावः चेतन्मभवति। तत्रा सन् वधि पतिः। प्राव्यमासन्य तो व्यमास वयस्म चिवती नमासाधि पय याजनमाद्वात वा एमिति गर्ने मा वाभ क्रिकि ए भिगत व तस्मादा धानल गाधि पर्यतिः। स्वामी। त वमेमासित स्वी देगो भ वति। तजा स्व चे देशि पतिः।। दश्मे मासिष्म वाभ वि

28

श्राद्याना जनम्भीमार विज्ञाः श्रामानुभ तानमाहामा द्यानका ले प्रश्न को को को मान रिरा कितः समम स्थाने यहिश्ने प्रोम वृति विश्वास के वात दा प्रस्त स्थान का प्रसं को रेगी स्वृति ाएवंचेदा त्म तराशि स्थायदाशने प्रते ती तो वा भ नितातदास्ति यः प्रसवस्या की क्रेरेतिंग्र त्वक्तं वा जन्मध्यमके र्तुः तदिश्नेष्ठरोत्रोके प्रतास्थित। तत्रादि सा ख्या ग्रिक्ते मयोरे के दारशस्त्रे मवति।हितीयस्कानवि।ति यश्येत्र वास्मार्कक्ष प्रकामियते।
अववं दाययेको द्वारको दुहितीयो मितातदा प्रसव स्मार्वाक् स्त्री स्यते। ।यमवक्रीयनकी सुमोरेग प्रदेशिय प्रजे द्वा ता न स्था यो में तुस देक यु न र स्यो में वे। द्वा एकिन विराशी श्निजी मान्या में के न सु क्रांशका नित के न्य दिनी ये नू भू त्य मान पाष्य यद्य के चंद्र यो रसतमस वस्या नंभ वित तरा प्यमीत वाकागरा वथा विता तरास्त्री देसयो र य तमस्य सुर्भवित तरेक युत्र ए यो क्रेवं। तयोः श्रिक्री मयोः महमादेवाकी युक्ती यरा परे ए हुए ते। तरा प्रत्या विक प्रयोग मरागंभ वितान यो रेवेकेन युक्ते वंदा परः प हुए ति। तरा प्रस्व स्था की कासी स्थाने लघुरी०

स्माने वेला या रहस्मित में बति तदा गर्पसंभ के वा कः अथवारि तच द शुका गारकाः सर्वेत्वयदिस्वनागाः स्त्रीयुक्तवाउ पचयस्णाम् विभवति तरा पिगर्सम्भ नाम नित्य साइक र नी दु प्रक्रकृतेः स्नामामयादि पि हत्नी जानाम पताः यदि स्त्री पुरुष योरम मित्र मेह त्वी जाभ नति तदा सम्मद्रिष पद प्रिमेश्यम्पति तथा मे यु मूर्भ संभ ने भ नित्र या कि साह नी रोव निधि रोणा य यानी रणनाराम ना क्रितिन जन यति मुखेति वियोगाः षंडानामप त्रमंभवन क विति ७ लग्ते वलिनि उरोवानव पंच मान रिष्य ते पिवा भवति योगा दृष्य तवीजानामकलावीएववधिराएणे विषमस्विषमनवाग्रकसंस्थिता मुरुष्यां कलग्याकीः युजन्यकाराः समभ सूचा विकासमन वोष्ट्रकाताः द

तमार्किष्णिता प्रयोगनमहाकल्षेरित साधानकालेया कल्षे विवर्णकारण से विधिनिमार्स मार्थ विधिनिमार्थ मार्थ मार्थ विधिनिमार्थ मार्थ मार्थ विधिनिमार्थ मार्थ म यसे उत्ताहते वा गहे तति सामा सामा मंत्री पातने ते य निर्मते र क्रियु के गर्भ स्पेष्ठ । विक्रित क्रियु के निर्मत क्रियु के विक्रिया । विक्रित क्रियु के विक्रिय क्रियु के क्रियु के विक्रिय क्रियु के क्रियु के क्रियु के विक्रिय क्रियु के क्रियु के क्रियु के विक्रिय क्रियु के क् चंद्रस्याणा कल्ये भेडापतनि की होति मेरी आपृष्टि ।।पावल युक्तासम्भ हारा ब्रुक्तिता व्यय्ती ती प्रमास्त्री (णवाकु जवेदी यदा तदा संभवति गर्भादा। यवतत्रगश्रीसराश्वाकस्या वादितम् की युक्त सस्य जन्म लग्ना जानगरि ते वा प्रा यानकाल उप न्या स्वीत न तायरा तर गर्भ स्वाप के व का जा जा जा गर के बहे से राशिनक कि का भावतः प्रियक्षी प्रचार के विषय स्वीत के यहा अवतः ।। तरास्र ते पि गर्भ स्वर भव यो गांदा यहा स्वीत यो गनि कल माहा स्वय स्वाप स्वाप स्वर मन व माना सन्य तम्

शरित्रीक्षिद्वर ष्ट्रास प्रसमे। त्र य्यावं मानीनन वाष्ट्रत्ता ताः वद्मका गास्ता यरा वधेनह श्रिते॥तरावनार यगर्भवा ने॥ अप्रति तार दं नमिद्दि स्मावराश्य शक्राता य्यात्षा वधे नत्रेवः प्रत्या वन्ने नान त्राना त्र प्रमाये गात्रप्र युयोगेयोदयोरिषमभवः कुरतिनिष्ठयमाह्। लग्नादिवमहानः सीरः लग्नारतियपंच मस्मनवमै कार्श्याना नामस्मनस्या नस्या वदा भवति तरा १ वन न से भवति एतानेगान र ष्ट्रा जन्मकाले प्रस्काले कात स्थान ने मितिवानिग्रिते तादि यत्र प्रमाने कात्र योग समाने स्थानिग्रह ते सादि यत्र प्रमाने स्थाने स्था योग चः॥ चैलातादिष मोपगतः शनैश्वरः पुनल नादेश वितादितात्रोगन्ता चन लमवलोकाविनिश्चयोगन्या १० इतिलघुनातवे साधानध्यायस्ततीयाः विस १६

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देशके दरम्य व निकारणा र

गर्निग ज्ञानमाहा विषय निर्मेश में घरिष्य ना दि स्थेर्य का समने रेव वह स्थित ने दार्कल में ने वेल के या व ता दिक्ति राशिस वेलिन वा का ने मार्ने यु पु रा यसभा वा व कि का समने वि षुतराव व ह स्पति चंदल रता की अयदि समराणि षुरिष्ठ ता नके वल या च के ने विधान वा शक्र राता के ता के विधान वा शक्र राता के ता के विधान वा शक्र राता के विधान वा शक्र राता के विधान वा विधान के विधा मासमगिष्ययणसभ वसवित्वज्ञ जनद स्वायर्भवित तरास्वी गर्भकिति तरास्वा यमले दिश्री रें शेषिति दिश्री राशित बंशक स्था वेती बुध र की य म्हों से प्रतिकृति ता ए तर् क्रम वित्य कि यु तथा का ती या पा न कि ने या दिन न वित्य प्रमुले रोष्ट्रमे वक्त की। वलिनेविषमे क्यु स्न वं स्त्रियमममहे मुक्ते दु किताः यमले दि

स्रीयां प्रकृती प्रयद्धित पूर्व के निविधि ना विशा श्रीय सास्करसाहिति तनुवं दार्का येमाविकतेनविषयोजनं उच्यतेनयोग्धामानमेनजातस्पितुः।संनिध नामित धानंचानेह यस्यत मलगतंच इमान पश्पति तस्मित ३: परोह्री जत्म वहतं में यह शित में ती तमा कि तस्मित है। परोह्री जता वहतं में कि शहरी में ती परोहे तर ता नः संग प्रकृति जती

CC-0. Gurukti Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देरेन वक्त सः॥ ।। इतिसीम रे ललविर्विता ग्राम्ने परी का ग्राम्भा ना ध्यायस्ति।
यः॥ ।। त्रथस्त ना ध्यायस्य स्थायस्य त्रा रावेव ना त्सित्रिणी साविकराज सतामसम्बवियना वश्रीग् कर तानाय चर्वा व वालेय रादि तः।।साविकग् हस्मित्रार्भभवति तरमाविको जातद्वि व स्वा अव राजस्क हस्म तरा राजसा जातइतिवक्तवााञ्चलामग्रहाविशाशेभविधावद्याममाजातइतिवक्तवेषु वितः सहशीसिति वित्र वजनामये ये वल वे साम्य युद् पंच तुराष्ट्री ना सु ब ३ सा दि॥ घ दिशितस्म तका विद्या ने व व के वाग सू व व ले रे यो ने वाश करत रसार्क वलिनः सर्शिम् नि बुंधा वाजातिक लदेशात्।।वाश्ममानतेनः स्मापवा दीर्ययुत्रेग्रह तुल्पतेन वी ब्रेधा वाजातिक लदेशानिति। ए विसम् निहानस्मापवा 2c

वत्रवान्तिहिम्भिष्ठरव स्रमेलात्रार शारा रशार रशार स्थित स्रमेन दी याद करिति प स्तिकाग्रह्म रूप हा नमा हा अवा के जो की वी वी द लाधिक लासिका ग्रहेन के मान कर्न के में के लिया के ल वधीवित्रं हतीय मित्रं कि सम्माने सिर्म मित्रं सिर्म के कि स्था के सिर्म के कि मित्र एक्सम्ब्रित विलामा हो हो है ने स्वित हो जा है कि सार के साम प्रति के के समान के साम प्रति अयसंति॥चे दोलग्रमण्यातेमध्येवा प्रकृतिमा ग्रेस्ट ॥ जना परी तस्य पि तुर्यमे दये वाकु जेनारते ॥ यस्पर्रे जन्मित वर्षमाः ॥ वर्षमा वर्षमा वर्षा तुः परोह्रो जन्म बहा माः ॥ यस्प्रे जन्मते प्रति प्रति प्रति । वर्षा व ॥ सहस्र स्थाप वित्र स्थितः परोह्रो जना व ना ना वर्षा कराणिय ती तंत्रा मान असामान असे गारकः से रो वास विता त दाला ते त्याता ता वक्त व अववाबंदल में ते वह स्मिति में बहु स्मिता तदा पि जार जा तथा खेज ईबड़ा वेद राष्ट्रिया ते जी वे ना पिर्शितेत दाषिजार जा ते व ते व ा छ। रहित का यह जादी प जा माह। श्री या मादिशाइतार्या या यदि यसा गहरकाता ति व्यह ।। केंद्र गते तिह गिर्निम् राव रस्तिकाग्ट्हम्प व ऋवां पा पयु ते र्वः से इ पश्वतिहा रा व चे बंदमिक जीवा प

द्वादशे वा मः।। षष ए नव भी पश्चिमी त चा पि सी दिलाए।। न व मी वाम ।। प्रमावामः। तना तमवनाति। तमिष्यामिष्या विष्यं विष्यं विषया विषया प्राप्ति विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषय शमेकाददशेवामवा है। अस्म योज ने विद्विनवासा पादा से द्वा गानं तरा लभ बनाति विन ततं यमल से क्रि सातुल ए प्राचाता । ए। विनतत्विम सादि यरिभव व द्वा गेयमले दिन्न भा वराष्ट्रा स्त्रीय न्या में त्या विन तत्व मध्येभागन तत्व वाने।। यरिभ प्राच द्वा मे क्रियम नेति विस्तर्म सिहर उड़ तर सह किस्ति हा असा किस हो ता समा हर जा से समा देश हैं मार्गानानात ए यह महास्था महास् 

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चित्रणेला तारा दारा मस्या ने अविशेष विशेष विशेष के स्थान करे ति यह वा वा मानी मते। य दापर प्रेन्न भागानात के मिरणेता अविशेष विशेष विष विशेष विष विशेष विष विशेष विष विशेष विष स्पा वी क्रम वितान दें दावि महक्त के तिए युषा पं व्यवसारि भवति। तदा चतु मिकंकरें भिक्ति हैं से वितान विवास वे वितान विवास वे वे विवास वे वे विवास वे वे विवास वे विवा प्रियु नकं ना भीने व विष्यते जी वे व ले ये ते हि शालगर है व ले वा पाष द्वार र पर्शान मा द्वालग्रात्वष्मत्तीयनवमद्वादशयः। व द्वाणदाव कंनेभए तदुकाभवति॥येनल ग्रेनप्रस्वसादुक्रिमितशयायात्न ग्रह्मदश्राद तीयो पादी ।।तपापि रुती योदिह्यणः

उपस्तिकागार दिति वं कं सं१० स्वारि ए ध्याय सारकारमात्रः त जारे ए योगमा तायस्य तमल ग्रात्व प्रस्काने च द्वाप्य विशास प्रमे वासीसका है ए र शपमाएः। सयाक के एक हमा के स्वास के स्व मामा मान के द्याण में मान हे न्हण ने ति दा मानम वर्ष ए के नमरण चयश्यमात्राचनद्यामे मेन हणते वाचन च हुणते व का समाण वात स्योमा एक मान स्थाप का प्रमाण वात स्थाप का प्रमाण का प्रम का प्रमाण का प्रम का प्रमाण का प्रम का प्रमाण का प्र क्री मा पा पे वंक्र पिर्विले कितान में मह ए। मानेन मर लिया सु तालग्रमप्राक्ता राजात्मवर्वनिवेषण मरणव्या संयाषण समात्र चंडमाकेतिच हरशतदायोगोनभवति खणारि एयोगातरमाह १ शिषानात्स 

ष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मावे पिध नुईरमीन केर न नमेराकाविक विवस्त्रमास्त्र एवस समिता श्रीय समिता ता नायमा हा ते वलाता तर स य वचंडमा यावन्ताग्रहाकि तासा व त्यांना उपस् मिलिदेन मिलिर ज ता निमी त केला है। व तम व तल व दिः सम्पानेर प्रजी शिलग्रा तरमस्यागह कुला कतना स्वित्या । यदंग देशमर्गा वास्त्रम दें। १० । वसमाना साम इसा गारा मा है उन्हों उपस्तिका ना यह ह त ल से स् पया त व वे पव म विस्मित्र इस है सह स्थान गतानाम स्वेशना व ते ग्रहा मवस्य तासा व ता उप से तिसी गरां हे हि व से मा वेद्र व गता ते गता ना ग्रहा लामध्यर दा व ते गरह हश च का इ यवस्य तासा वे ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रस्मारंसा दारम्याव चतुर्धस्मग्रेषसावतंश्या एवं स्मान च च कस्पर्वादिष्य तायम पद्ध ने यात व यदा एवं देशविषापन वरिष्य ताथ वति। तदान् तस्म सुर्वेत् म निधनच देख ये तादि असमें दुगते या ये द्वितेच दुमिल गता तेतदालः सियते । ४ वकः पार्षप्रार्देणप्रभे किरकेरयेभवेनम् सानिधनव तृष्य स्थितं क्रि. त्रीले क्रिद्धभसराम् तुगरेशाः पाच तुरामः सरमा पा पाना का शासिमर एदाता उदयगते। वाचेदः सम्मराशिसंस्थिते गर्पः। हा मिरि खातर माह लाता सा ममस्या ने चंद्रमायदाभ विता अप्रेच द्वाद शेवाल के नात ने वह ने इम साम हणा पक्र हो ज विता ने द मा सुभ क राज्हरक्तभवति। तचम्भग्रहः कित्रिकेदोभवि।। तदानात्रस्य गदेमः।। धाम्पिष् ॥२ए। विम्ह्र यमार लग्ना चंद्र मा च तुर्घ स्था ने ए मेवास प्रमे वास्थितः।। तत्रच पाप गत्र यो प्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नियापस्य म वगतस्यानेत देव स्वतंत्रेतं

मिग्रहोभ विति से पा प्रमहो वेक गामीभ वेक गोत वह पा ते वहाजा तस मासे नमर पा वक्त से पा पा पे केल गुरू पा पा पा पे केल गोत पा पे केल गोत पा पे केल गोत पा पे केल गोत पा पा पे केल ग लाजाता समस्या प्रभावति तदा ना तस्य माने नम् र एवं तत्र वा रा सि एवं तर माहा ज वजवाकी नापग्रह रशनेसनेवेमेनवाशकेन विकतः॥एवसव पापग्रहायदा राज्य न्याभ वितासंस्माकालप्रभावितातम् तस्मलगरम् वद्दाराभ वितातसा तातिक्रनसंध्यकाल इति घतेकक्रीः॥ राज्य ततिः पार्वाः तथा पादि ममस्बद्धारा विकास पादि ममस्बद्धारा विकास स्वर्धारा स्वर्या स्वर्धा डेषु पणातणा के चं दु भी मरा ले भारा लाम वस्यालय दाभ वित तदा जा तस्य सुर्व त्रायम् र अपारि ए यो यो गद्य मा या वानंशील म स्पा सुदि तस्तावतंरका प्रा

CC-0. Gyrukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तंस्प्रम् एक मार्थिल का त्राम्य मार्थित का त्राम्य का निम्न का निम नस्यालग्रस्या वाचंदी वीभवति। पाष्याह युभविति। मुक्त विधवहस्य तीनाममलग्र दादशननमिधनमस्मितेश्रद मेरिस मारी: जातस्पमराणभवतियदिनवलयत पतिर्वचमां शिस्त तमदन वात्तलग्तर धेष्रप्रभय तामर लायगीतरिषाः भगस्त श्रिपु च देव ए में मंदिवलि मिन्यु ते विलोकि ते वा ए तमे न वालिना न हश्प तेत रा जातसमर् लायभ वति॥ १०। सन् र क्राय एका लानाम रि लाना काल जानमा द्रायसिन निर्धारे जातसामर एका लिवि ने किसा सिन्योग जातस्य येथे गक्ति रेग्नहा से काम ध्येयोवल वाब्स यशिव न राशी वार तामा वड्ड मियते जातस्प्रम राव्यक्तव वर्षातः मं वत्रारंगतरात्तं भवति सन्ति सन्त ध्यातस्त्रजातस्य त्राचे अवित्र वित्र ति।तराजा तम्मसराप्वे प्रयते।। श्राकृषिका तरमाह सहउप प्रवेश वत्र वत्र ते देतिसीप प्रवास वर्ग वद्ग तर प्रकाल कर तराजा ते वदेल त्यार एममान गरी प्रीमेया तः कि मुधि यते सीतिहें है दिस कि की मार्ग किया है मिया है कि मार्ग है कि मार् विति देशपा शासे प्रमाप से वेश शासे मक्ति राजा में के लिया में के लिया में माना से चंद वर के विश्व के लिया है जिया ने वास के से वास के से से के लिया के 

